E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

ज्ञान चतुर्वेदी के व्यक्तित्व की सामाजिक प्रासंगिकता

शोध–प्रपत्र

डॉ. विजय कुमार शर्मा
प्रो. हिन्दी विभाग
एस.एल.पी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
मुरार ग्वालियर (म.प्र.)

चन्द्रप्रभा तिवारी
शोध छात्रा हिंदी
जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)

Paper Received date
05/02/2026
Paper Publishing Date
10/02/2026
DOI
https://doi.org/10.5281/zenodo.18900373

IMPACT FACTOR
5.924

साहित्य शब्द मूल रूप में शास्त्र के अर्थ में प्रयुक्त होता था, परंतु बाद में काव्य के लिए भी इस शब्द का प्रयोग होने लगा। वस्तुतः आज साहित्य शब्द जो अर्थ दे रहा है वह अर्थ पहले काव्य शब्द देता था। काव्य शब्द का अब अर्थ संकुचन हो चुका है और वह कंविता के अर्थ का व्यंजक हो चुका है, किंतु कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूः के प्रयोग में कवि शब्द की जो अर्थ व्यापकता है वह परवर्ती काल में संकुचित हो गया। महाकवि बाणभट्ट को महाकवि कहा जाता है जबकि उनकी प्रधान रचना कादम्बरी एक गद्य कृति है। इसी तरह काव्येषु नाटकं रम्यं अथवा गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति जैसे प्रयोग में काव्य शब्द वस्तुतः साहित्य के पर्याय का अर्थ व्यंजित कर रहा है।

कालांतर में जब काव्य शब्द का अर्थ संकोच हुआ और वह कविता मात्र का अर्थ व्यंजित करने लगा तब साहित्य शब्द का वर्तमान अर्थ में प्रचलन व्यापक रूप ले सका। भर्तृहरि ने साहित्य, संगीत, कला की त्रयी में साहित्य को काव्य का समानार्थक माना है। भर्तृहरि का समय 650 ई. के लगभग माना जाता है। अतः ईसा की सातवीं शताब्दी में साहित्य शब्द काव्य के लिए प्रयुक्त होने लगा था। इसी समय के लगभग भामह ने काव्यालंकार में शब्दार्थौ सहितौ काव्य लिखकर इस प्रयोग की पुष्टि की। राजशेखर (10वीं सदी) ने शब्दार्थ योर्यथावत्सहभावेन विद्या साहित्यविद्या कहकर इस परिभाषा को और भी विस्तृति दी है।

कुंतक और भोज ने तो साहित्य क्या है इसी समस्या पर विचार किया है। वे साहित्य को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि मार्गानुरूप माधुर्य आदि गुण, वक्ता की अतिशयता को द्योतित करने वाला अलंकार–विन्यास और रसपरिपोषक वृतियां एक–दूसरे से स्पर्द्धा करते हुए सहृदयों के हृदय में आह्लाद उत्पन्न करने में समर्थ शब्दार्थ ही साहित्य है। रुय्यक ने साहित्य मीमांसा नाम से स्वतंत्र ग्रंथ लिखा है। व्यक्ति–विवेक पर लिखी अपनी टीका में भी वे साहित्य शब्द का प्रयोग रूढ़ अर्थ में करते हैं। चौदहवीं सदी में आचार्य विष्वनाथ ने अपने काव्यशास्त्र का नाम ही साहित्यदर्पण रखा।

हिंदी साहित्य के मध्यकाल में अधिकतर काव्यशास्त्रीय ग्रंथ रस से संबद्ध हैं, जिनमें काव्य के व्यापक अंगों को लिया गया है उनके नाम काव्य रखे गए हैं। साहित्यलहरी (सूरदास), साहित्यसार (मतिराम) आदि कुछ ग्रंथ ऐसे जरूर हैं जिनके नाम से साहित्य शब्द जुड़ा हुआ है।

साहित्य और समाज के पारस्परिक संबंध को लेकर प्राथमिक विवेचन ग्रीक इतिहासकार हेरोदोतस में मिलता है। समाज पद्धति का मानव–चेतना और मनुष्य के लोकव्यवहार पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसके संबंध में उसने विस्तारपूर्वक विचार किया है, परंतु इस विषय पर विस्तृत विवेचन 16वीं सदी के फ्रेंच विद्वान मानतेन की रचनाओं में होता है, क्योंकि साहित्य और समाज की पारस्परिक क्रिया–प्रतिक्रिया का उपयोग समीक्षक की अपेक्षा इतिहासकार के लिए अधिक महत्वपूर्ण है उन्नीसवीं सदी में ही साहित्य के इतिहास लेखन को वैज्ञानिक दृष्टि मिली और साहित्य समाज के अंतरावलंबन को लेकर विशद विवेचन हुआ।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

टेन का कहना है कि किसी भी युग की सांस्कृतिक अन्विति का अध्ययन जाति–धर्म, युग–धर्म और सामयिक प्रवत्तियों के समीकृत अध्ययन से हो सकता है। परंतु इस संबंध में सबसे महत्वपूर्ण शास्त्र क्रिस्टोफर कॉडवेल का ग्रंथ इल्यूजन एंड रियिलिटी ए स्टडी ऑफ द सोर्सेज ऑव पोइट्री है, जिसमें साहित्य के समाजगत और मनोविज्ञान स्रोतों का शोध हुआ है।

कॉडवेल का मूल विषय काव्य विकास के स्रोतों तथा काव्य की प्रकृति और उसके विकास की सरणियों का उद्घाटन है, परंतु उसने इतिहासकार के दृष्टिकोण को अपनाकर इन विषयों पर विस्तृत सूचनाएं प्रस्तुत की हैं, जो इस विकास के क्रमागत स्वरूप निर्माण के साथ, स्थान–स्थान पर तत्संबंधी धारणाओं का भो निर्माण करती है, इसमें संदेह नहीं कि साहित्य के सामाजिक मूल्यों के अध्ययन से हम किसी भी साहित्य संपत्ति को संपूर्णतः विश्लेषित नहीं कर सकते।

तत्कालीन युग में सामाजिक मर्यादाएं जन जीवन को जकड़े हुए थी। विद्रोहात्मक चेतना विवशतापूर्वक दब घुट कर रह जाती थी। प्रेमचन्द ने यद्यपि उस पीड़ा को स्वर दिये किन्तु त्याग और समर्पण के आदर्श के आगे क्रान्ति का विस्फोट न होने पाया। आगे आने वाले कथाकारों ने युग एवं वातावरण के बदलते परिवेश के अनुसार सामाजिक परम्पराओं एवं मानव की आंतरिक वृत्तियों का खुला चित्रण किया। ज्ञान चतुर्वेदी ने किसी मनोविश्लेषणात्मक ग्रन्थि में न फंसकर सामाजिक सत्यों का स्वरूप उद्घाटन किया। सामाजिक रूढ़ियों के प्रति विद्रोह एवं नये युग की मान्यताओं का समर्थन ज्ञान चतुर्वेदी साहित्य में किया गया है।

आज के वैज्ञानिक भौतिकवादी मानस में तर्क युक्त आनन्द की प्रतिष्ठा करने की कोशिश ज्ञान चतुर्वेदी ने सर्वत्र की है। मानव कर्म में प्रवृत्त होकर जिस आनन्द की अनुभूति करता है, वह वाह्य ईष्वरीय भजन से कहीं ऊपर है। अतः अध्यात्म और विज्ञान का समन्वयात्मक रूप ही श्रेयस्कर है।[प]

ज्ञान चतुर्वेदी एक मानवता प्रिय जीवन प्रकाश से भरपूर आशाओं में विष्वास रखने वाले संवेदनशील मानव हैं। उन्होंने जीवन को जिया है, भोगा है और पल–पल के चुने हुए कणों को लेखनीबद्ध किया है। उनका साहित्य बालू पर खींची गई लकीरें नहीं है, वरन् चिरन्तन मानवीय फलक पर गहरी रेखाओं से अंकित यथार्थ जीवन के पदचिन्ह हैं। कभी भी उनके स्वाभिमान ने कोई अनुचित समझौता नहीं किया। वे हर घुटन झेलकर आगे बढ़े हैं। उनकी आस्थामयी दृष्टि का सार साहित्य जगत की अमूल्य पूंजी है– जड़ चेतन मय, विष अमृत मय–अंधकार प्रकाश मय जीवन में न्याय के लिये कर्म करना ही होगा। यह बंधन ही मेरी मुक्ति भी है।

इस अंधकार ही में प्रकाश पाने के लिये मुझे जीना है। आशा है कि ज्ञान चतुर्वेदी अतीत की ग्रन्थियाँ खोलकर न्याय और मान्यता को शाष्वत रखने के लिये सामाजिक जीवन के सजग चितेरे होकर प्रेरणा से स्वर मुखरित करते रहेंगे। असलियत यह है कि ज्ञान चतुर्वेदी का सृजन शक्ति का वह बिन्दु है, जिजीविषा का वह अमृत है जो सदैव भी हमें जीवनदान देता रहेगा, इसमें सन्देह नहीं है।

ज्ञान चतुर्वेदी मात्र एक व्यक्ति नहीं परम्परा के सानिर्वाह हैं, उसकी एक सशक्त कड़ी है, पर ऐसी जो अतीत को वर्तमान से और वर्तमान को भावी से जोड़ती है। अतीत के रसनिर्झर में स्नात होकर वर्तमान की गंध को वितरित करते हुए ज्ञान चतुर्वेदी ने भावी के लिए जिन अमृत–बिन्दुओं की साहित्यिक आँगन में वर्षा की है, वे उनके लेखन को प्रामाणिक भी बनाते हैं और विष्वसनीय भी।

स्वातन्त्रय के पश्चात् उन्होंने जिया है, उस समाज के सभी परिवर्तनों, मूल्यों को बारीकी से परखा है और उस परिप्रेक्ष्य में स्वतन्त्र भारत का चित्र आँका है। उनका लेखन अनुभवसिद्ध लेखन है और उनकी प्रतिभा उपन्यासों के रूप में जीवन के कण बटोरती हुयी गहरे और दीर्घ परिश्रम के साथ परिपक्व होकर उपन्यासों के रूप में प्रस्फुटित हुयी है।[पप]

यही कारण है कि एक–दो उपन्ययों के प्रकाश में आते ही ज्ञान चतुर्वेदी हिन्दी साहित्य जगत के महत्त्वपूर्ण स्तम्भ बन गए। वर्तमान और अतीत दोनों को ही सृजन–प्रतिभा ने समेट लिया है। वस्तुतः वर्तमान को देखने के लिए ही उन्होंने अतीत की गाँठ खोली हैं। ज्ञान चतुर्वेदी की लेखनी ने हिन्दी गद्य साहित्य की विविध विधाओं का स्पर्श किया है और वे हर प्रकार की रचना में सफल हुए हैं।

ज्ञान चतुर्वेदी अतीत के इतिहास और वर्तमान में भोगे जा रहे जीवन के यथार्थ से वस्तु–विषय लेकर अभी तक अनेक सुन्दर उपन्यासों का सृर्जन किया है। उनके कुछ उपन्यास तो वस्तुतः औपन्यासिक कला के चरम उत्कर्ष को प्रकट करने वाले हैं। इन्हीं चरमोत्कर्ष उपन्यासों की सर्जना के कारण आज हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में उनका मूर्धन्य स्थान सर्वमान्य है। वस्तु विधान चाहे इतिहास के भूले–बिसरे पृष्ठों से अवतरित किया गया हो, चाहे वर्तमान में भोगे जा रहे जीवन–यथार्थ से, उनकी मूल चेतना सामाजिक यथार्थ की उद्भावनाओं से ही अनुप्राणित है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

हिन्दी साहित्य संसार में समय–समय पर ऐसे कालजयी युगस्रष्टा साहित्यकार जन्म लेते रहे हैं जिन्होंने अपनी लेखनी के अमृत तत्व से समाज का हित और मानवता का प्रसार किया है। प्रेमचन्द के बाद की पीढ़ी को महिमा मंडित करने वाले जो दो चार लोग हिन्दी की पूँजी हैं, उनमें ज्ञान चतुर्वेदी का नाम प्रथम पंक्ति में आता है। वे एक ऐसे व्यक्तित्व के धनी सर्जक है जिनके लिए जीवन जीने के कर्म की परिभाषा है, जिजीविषा का पर्याय है। साहित्य साधना उन्होंने एक तपस्वी की भाँति की, अपने पसीने और रक्त की एक–एक बूँद निचोड़ कर उन्होंने साहित्य सृजन पर न्यौछावर कर दिया। उनका परिमाण में प्रचुर और वैविध्यपूर्ण साहित्य इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

ज्ञान चतुर्वेदी का धर्म मानवता था और उनकी पूँजी है मानवीय संवेदनाओं से उपजे सुख दुःखमय क्षण। शायद वे जानते है कि रचना की असली जमीन जिन्दगी है और जिन्दगी से अंतरंग रिश्ता स्थापित कर उसके विविध रूपों को अपने अनुभवों का अंग बनाना ही रचनाकार की सफलता का मूलमंत्र है। यही कारण है कि उनका साहित्य जीवन के असीम अनुभवों का पिटारा बन गया है। प्राचीनता का सम्मान करते हुए भी उनके सोचने का दृष्टिकोण प्रगतिशील और क्रान्तिकारी रहा और यही उनके साहित्य का मूल वैशिष्ट्य है। उनका समग्र साहित्य जनवादी है, यथार्थवादी है, मानवतावादी है।[पपप]

ज्ञान चतुर्वेदी बहुत ही मिष्टभाषी, हँसमुख, चुटकुलेबाज और प्यारे इंसान थे। एक ऐसे इंसान, जिनकी सहृदयता समूची मानवता को प्राप्त है। जीवन संग्राम के जीवंत योद्धा, उदार अलमस्त मानव, रूढ़ियुक्त शैव, आस्तिक, बहुघुमक्कड़, बहुश्रुत, बहुपाठित, बहुबोली पारखी, बहुभाषाविज्ञ, जागरूक इतिहास और पुराण प्रेमी, पूर्वाग्रहमुक्तः, प्रगतिशील विचारक, अनुसंधित्सु, क्षेत्रीय शोधकर्ता, योग्य अनुवादक, सुधी संपादक, प्रवीण हास्य व्यंग्यकार, कुशल अभिनेता, सफल रंगमंच निर्देशक, प्रवीण सिनेरियो लेखक, अपूर्व शैलीकार, बाल साहित्य प्रणेता और असंख्य लेखों–निबंधों, संस्मरणों, रेडियो नाटकों एवं कहानियों के रचयिता आदि सब को मिलाकर जो व्यक्तित्व बनता है।

गेटे के शब्दों में सिद्धान्त पीले पड़ जाते हैं पर जीवन वृक्ष सदा हरा रहता है ज्ञान चतुर्वेदी के विषय में प्रसिद्ध है कि वे अपने सिद्धान्तों को, विचारों को भरपूर दृढ़ता के साथ पकड़ते है और वहाँ से कोई बाधा, कोई विरोध उन्हें डिगा नहीं पाता है। परन्तु वे कोरे सिद्धान्तवादी नहीं है, वे जनवादी है। उनके लेखन की जड़ें जनजीवन के मध्य गहराई से जमी हुई हैं। उनका सम्पूर्ण साहित्य जीवन के बारे में नहीं वरन् स्वयं जीवन है। उनके समस्त पात्र इंसान होने की प्रक्रिया से जीवन जीते हैं।

हर बड़ा लेखक, अपने सृजनात्मक जीवन में, जिन तीन सच्चाइयों से अनिवार्यतः भिड़न्त लेता है, वे हैं– ईष्वर, काल तथा मृत्यु। अलबत्ता, कहा जाना चाहिए कि इनसे भिड़े बगैर कोई लेखक बड़ा भी हो सकता है, इस बात में सन्देह है। कहने की जरूरत नहीं कि ज्ञान चतुर्वेदी ने अपने रचनात्मक जीवन के तीस वर्षों में, उत्कृष्टता की निरन्तरता को जिस तरह अपने लेखन मैं एकमात्र अभीष्ट बनाकर रखा, कदाचित् इसी प्रतिज्ञा ने उन्हें, हमारे समय के बड़े लेखकों की श्रेणी में स्थापित कर दिया है।[पअ]

हम न मरब में उन्होंने मृत्यु को रचना के प्रतिपाद्य के रूप में रखकर, उससे भिड़न्त ली है। नष्वर और अनष्वर के द्वैत ने दर्शन और अध्यात्म में, अपने ढंग से चुनौतियों का सामना किया; लेकिन रचनात्मक साहित्य में इससे जूझने की प्रविधि नितान्त भिन्न होती है और वही लेखक के सृजन–सामर्थ्य का प्रमाणीकरण भी बनती है। ज्ञान चतुर्वेदी के सन्दर्भ में, यह इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि वे अपनी गल्प–युक्ति से मृत्युबोध के केऑस को जिस आत्म–सजग शिल्प–दक्षता के साथ एस्थेटि में बदलते हैं, यही विशिष्टता उन्हें हमारे समय के अन्यतम लेखकों के बीच ले जाकर खड़ा कर देती है।

लेखन वैशिष्ट्य का दूसरा चरण था चिंतन, मनन। ज्ञान चतुर्वेदी किसी विषय को लेकर पहले यथोचित होमवर्क करते है, नोट्स तैयार करते है। तदुपरान्त उसे खूब पढ़ते और गुनते है। अपने मित्रों, परिचितों से उस विषय पर चर्चा कर उनकी सम्मति जानने का प्रयास करते है और फिर स्वयं उस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करते है। इसके उपरान्त शोधपरक दृष्टि से विवेचन और विश्लेषण करने के बाद ही तृतीय चरण में प्रवेश कर उसका चित्रण व निरूपण करते है। वे कहते है रचना के क्षण भावोद्रेक के क्षण होते हैं। इस अवस्था में इन्सान इन्ट्यूटिव स्टेट में पहुँच जाता है। प्राणशक्ति एक जगह केन्द्रित हो जाती है। प्राण शक्ति के केन्द्रित होने पर इन्ट्यूटिव आई (प्रज्ञानेत्र) बनती है।

इस दशा में आँखें नहीं देखती, मन देखने लगता है धीरे–धीरे मन सध जाता है। सध जाने पर वह पिक्चर्स देने लगता है। ज्ञान चतुर्वेदी इस स्थिति का वर्णन एकदम समाधि दशा जैसा करते हैं। वे कहते हैं– बिम्बों के निकलने का अजीब अनुभव मेरे पास है। मुझे कभी–कभी आग की लपटों से, कभी–कभी अंधकार से चित्र उभरते दिखाई देते हैं। मुझे कभी–कभी एक नाद सुनाई देता है। वह संगीत भी हो सकता है और बाबा (बाबा रामजी) की आवाज भी। वह नाद करके इमेज फेंकता है।[अ]

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

संदर्भ सूची

1. कुमार सुरेश, अमृतलाल नागर के कथा–साहित्य में सामाजिक परिवेश, अनंग प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2014, पृ. 138
2. कुमार सुरेश, अमृतलाल नागर के कथा–साहित्य में सामाजिक परिवेश, अनंग प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2014, पृ. 140
3. खन्ना मंजरी, अमृतलाल नागर का कथेतर साहित्य, लोकवाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, संस्करण 2011, पृ. 19
4. चतुर्वेदी ज्ञान, हम न मरब, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, संस्करण 2022, पृ. 1
5. खन्ना मंजरी, अमृतलाल नागर का कथेतर साहित्य, लोकवाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, संस्करण 2011, पृ. 31